

नैदानिक मनोविज्ञान (Clinical Psychology) का इतिहास काफी उतार-चढ़ाव भरा रहा है। यह एक समय में केवल दर्शनशास्त्र और चिकित्सा का हिस्सा था, जो आज एक पूर्ण वैज्ञानिक विषय बन चुका है।

नैदानिक मनोविज्ञान का इतिहास बहुत पुराना है, लेकिन एक स्वतंत्र विषय के रूप में इसका विकास कुछ प्रमुख चरणों में हुआ:

यहाँ इसके इतिहास के मुख्य पड़ावों का विस्तृत विवरण दिया गया है:

1. प्रारंभिक काल (Early Foundations)

18वीं शताब्दी के अंत तक, मानसिक रूप से बीमार लोगों के साथ बहुत बुरा व्यवहार किया जाता था। उन्हें जंजीरों में बांधकर रखा जाता था।

- मानवतावादी सुधार:** फ्रांस के **फिलिप पिनेल (Philippe Pinel)** और इंग्लैंड के **विलियम टुक (William Tuke)** ने 'नैतिक उपचार' (Moral Treatment) की वकालत की। उन्होंने मानसिक रोगियों को दया और सम्मान के साथ रखने की शुरुआत की।

2. आधुनिक नैदानिक मनोविज्ञान का जन्म (1896)

नैदानिक मनोविज्ञान का औपचारिक जन्म 19वीं शताब्दी के अंत में हुआ।

- लाइटनर विटमर (Lightner Witmer):** इन्हें "नैदानिक मनोविज्ञान का जनक" माना जाता है। 1896 में उन्होंने पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय में दुनिया का **पहला मनोवैज्ञानिक क्लिनिक** खोला।
- उन्होंने ही सबसे पहले "**Clinical Psychology**" शब्द का प्रयोग किया। उनका ध्यान मुख्य रूप से सीखने की समस्याओं वाले बच्चों की मदद करने पर था।

3. मूल्यांकन का युग (Early 20th Century)

20वीं सदी की शुरुआत में मनोवैज्ञानिकों का मुख्य काम केवल 'आकलन' (Assessment) करना था, न कि इलाज।

- अल्फ्रेड बिनै (Alfred Binet):** 1905 में उन्होंने फ्रांस में पहला बुद्धि परीक्षण (Intelligence Test) विकसित किया। इससे बच्चों की मानसिक क्षमता मापने का वैज्ञानिक आधार मिला।
- प्रथम विश्व युद्ध (WWI):** युद्ध के दौरान सेना के लिए **Army Alpha** और **Army Beta** टेस्ट बनाए गए ताकि सैनिकों की भर्ती और वर्गीकरण किया जा सके। इसने मनोवैज्ञानिकों की समाज में उपयोगिता साबित की।

4. मनोविश्लेषण का प्रभाव (Psychoanalysis)

इसी समय, **सिगमंड फ्रायड (Sigmund Freud)** ने ऑस्ट्रिया में 'मनोविश्लेषण' की नींव रखी। हालांकि फ्रायड एक डॉक्टर थे, लेकिन उनके विचारों (जैसे अचेतन मन, दमित इच्छाएं) ने क्लिनिकल साइकोलॉजी को बहुत प्रभावित किया। उन्होंने यह विचार दिया कि मानसिक बीमारियों का इलाज "बातचीत" (Talking Cure) के माध्यम से किया जा सकता है।

5. द्वितीय विश्व युद्ध: एक बड़ा मोड़ (WWII)

द्वितीय विश्व युद्ध नैदानिक मनोविज्ञान के लिए सबसे महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ।

- PTSD की पहचान:** युद्ध से लौटे सैनिकों में 'शेल शॉक' (जिसे अब PTSD कहते हैं) की गंभीर समस्या देखी गई।

- चिकित्सकों की कमी:** मनोचिकित्सकों (Psychiatrists) की संख्या बहुत कम थी, इसलिए अमेरिकी सरकार ने मनोवैज्ञानिकों को प्रशिक्षण देकर उन्हें थेरेपी करने की अनुमति दी।
- इसके बाद ही मनोवैज्ञानिकों ने केवल 'टेस्टिंग' करने के बजाय 'इलाज' (Therapy) करना शुरू किया।

6. बोल्डर मॉडल और आधुनिक विकास (1949 - वर्तमान)

युद्ध के बाद, यह तय करना आवश्यक था कि एक क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट का प्रशिक्षण कैसा होना चाहिए।

- बोल्डर सम्मेलन (Boulder Conference, 1949):** यहाँ 'Scientist-Practitioner Model' अपनाया गया। इसके अनुसार, एक मनोवैज्ञानिक को एक अच्छा शोधकर्ता (Researcher) भी होना चाहिए और एक कुशल चिकित्सक (Clinician) भी।
- थेरेपी का विस्तार:** 1950 और 60 के दशक में CBT (Cognitive Behavioral Therapy), मानवतावादी दृष्टिकोण (Carl Rogers) और व्यवहारवाद का उदय हुआ।

निष्कर्ष (Conclusion)

आज नैदानिक मनोविज्ञान केवल क्लिनिकों तक सीमित नहीं है। यह तकनीक, शोध और डिजिटल थेरेपी के माध्यम से पूरी दुनिया में मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने का काम कर रहा है।